B - IV
L - 35
MIH

नेहरू रिपोर्ट के विरुद्ध प्रतिक्रिया

जिन्ना - 14 सूत्री मांग (मार्च 1929)(मुस्लिम लीग)

- जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस ने भी डोमिनियन स्टेटस की आलोचना की और कांग्रेस के भीतर इंडिपेंडेंस फार इंडिया लीग नामक संस्था बनाई, जिसका उद्देश्य था कांग्रेस के लक्ष्य को पूर्ण स्वराज के रूप में परिवर्तित करना।
- 1928 में कांग्रेस ने सरकार को चेतावनी दी कि एक वर्ष के भीतर यदि डोमिनियन स्टेटस का दर्जा नही दिया गया तो कांग्रेस का लक्ष्य होगा पूर्ण स्वराज।
- 1929 में दिल्ली मे इस मुद्दे पर लीडर्स सम्मेलन हुआ और वायसराय इरविन से बात भी की गई लेकिन वायसराय ने किसी निश्चित समय सीमा के भीतर डोमिनियन स्टेटस देने का आश्वासन नही दिया।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Most Trusted Learning Platform

कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन - (Dec - 1929)

अध्यक्ष - जवाहर लाल नेहरू

- पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित
- 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस मनाने का आह्वान किया गया (स्वतंत्रता का शपथ)

- स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में तिरंगा फहराया गया।
- कांग्रेस कार्य समिति को आन्दोलन चलाने के लिए अधिकृत किया गया और कार्य समिति ने गांधी जी को अधिकृत किया।

जनवरी 1930 : गांधी की 11 सूत्री मांग

प्रमुख मांग :-

- सिविल सेवा एवं सेना के व्यय में 50% की कटौती की जाए।
- भू राजस्व में 50% की कटौती की जाए।
- नमक कर को समाप्त किया जाए तथा नमक पर सरकार के एकाधिकार को भी।
- भारतीय उद्योगों को संरक्षण दिया जाए। (सीमा शुल्क में वृद्धि)
- भारतीय नौपरिवहन उद्योग को भी संरक्षण दिया जाए।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930 - 1934)

कारण →

- संघर्ष - तैयारी - संघर्ष का अगला चरण था सविनय अवज्ञा आन्दोलन।
- असहयोग के पश्चात परिवर्तन समर्थक एवं परिवर्तन विरोधी नेताओं की गतिविधिया से कांग्रेस के सामाजिक आधार का विस्तार हुआ और संगठनात्मक ढांचे का भी।
- तीसरे दशक में क्रान्तिकारी गतिविधियों एवं मार्क्सवादियों की गतिविधियों से भी युवाओं किसानों मजदूरों में राजनीतिक जागरूकता एवं उत्साह का वातावरण बन रहा था।
- साइमन आयोग के विरोध के क्रम में पूरे भारत में राजनीतिक उत्साह दिखा।
- संविधान सुधार के मुद्दे पर सरकार एवं कांग्रेस के बीच गतिरोध बना रहा।
- 1929 में महामंदी के कारण ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर आर्थिक दबाव दिखा और यह आन्दोलन आरंभ करने के लिए एक अनुकूल समय था।
- इसी पृष्ठभूमि में लाहौर अधिवेशन में आन्दोलन प्रारम्भ करने के लिए गांधी जी को अधिकृत किया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Note !-

12 मार्च 1930 को गांधी जी साबरमती आश्रम से दांडी तट की यात्रा पर निकलते हैं और 6 अप्रैल को नमक कानून का उल्लंघन करते हैं।

- दांडी तट के पश्चात गांधी जी धरसाणा नमक निर्माण केन्द्र की की ओर बढ़ते हैं उन्हे गिरफ्तार किया गया और इसके पश्चात सरोजनी नायडू और कई अन्य नेताओं को भी गिरफ्तार किया गया।
- आखिल भारतीय स्तर पर नमक कानून का उल्लंघन तमिलनाडु मे राजगोपालाचारी इन्होंने भी यात्रा की तिरुचिरापल्ली से वेदारण्यम तक

केरल - के. केलप्पन (केरल के गांधी)
यात्रा केरल के तट पर (कालीकट से पायन्नूर तक)

उड़ीसा में - गोपबंधु चौधरी
असम - श्रीमति चन्द्रप्रभा
आन्ध्र प्रदेश में - दुग्गीराला, बालकृष्णय्या
(पुस्तक - गांधी गीता)

आन्दोलन के मुख्य विरोधात्मक कार्यक्रम थे -

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

सरकारी नौकरियों एवं विधानमण्डल से त्यागपत्र, शराब एवं विदेशी कपड़ो की दुकान पर धरना, सरकार को भू-राजस्व न देना, स्थायी बंदोबस्त वाले क्षेत्रों में चौकीदारी कर न देना, नमक कानूनों का उल्लंघन, ब्रिटिश वस्तुओं एवं सरकारी संस्थाओं का बहिष्कार।

नमक का मुद्दे के रूप में चयन क्यों -

- नमक एक ऐसा मुद्दा था जिसमे जाति, धर्म, क्षेत्र के नाम पर विभाजित होने की संभावना नही थी। इस मुद्दे के कारण आम लोगों किसानों, गरीबों को आन्दोलन से जोड़ा जा सकता था।
- यदि आन्दोलन सफल रहता तो लोगों को आर्थिक राहत भी मिलती।

आन्दोलन की विशेषताएँ :-

लक्ष्य :-

- कांग्रेस के नेतृत्व में यह पहला आन्दोलन था जिसका लक्ष्य था पूर्ण स्वराज अर्थात राजनीतिक स्वतंत्रता। इसके साथ ही कांग्रेस ने आंदोलन के दौरान पूर्ण स्वराज को किसानों, मजदूरों नागरिक अधिकारों एवं आर्थिक न्याय के संबंध

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

में भी स्पष्ट किया। (कराची अधिवेशन 1931)

प्रसार :-

- आन्दोलन का प्रसार अखिल भारतीय स्तर पर शहरों के साथ-साथ ग्रामीण भारत में भी बड़े पैमाने पर दिखा। यहाँ तक की सुदूरवर्ती गांवो में भी।
- सीमावर्ती क्षेत्रों मे भी इसका व्यापक प्रभाव दिखा जैसे - उत्तरपश्चिम सीमा प्रांत में खान अब्दुल गफ्फार खां (सीमांत गांधी) के नेतृत्व में, तथा उत्तर पूर्व में मणिपुर एवं नागालैंड से भी रानी गिडनेल्यू के नेतृत्व में।
- कुछ रियासतों की भी आन्दोलन में भागीदारी रही जैसे - कश्मीर (शेख अब्दुल्ला) अलवर (के. एम अशरफ)

सामाजिक आधार :-

- असहयोग आन्दोलन की तुलना में छात्रों, महिलाओं किसानों एवं भारतीय पूँजीपतियों की व्यापक भागीदारी रही।
- असहयोग आन्दोलन की तुलना मे मुस्लिम समुदाय एवं मजदूरों की भागीदारी अपेक्षाकृत कम थी।

आन्ध्र, महाराष्ट्र, मध्यप्रांत, कर्नाटक इत्यादि क्षेत्रों में वन संबंधी मुद्दों को लेकर जनजातीय

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

समाज की भागीदारी दिखी।

- गुजरात में वानर सेना एवं मंजरी सेना का गठन बच्चों के लिए किया गया। उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में चन्द्र मोहन सिंह गढ़वाली के नेतृत्व में सैनिकों ने निहत्थे आन्दोलनकारियों पर गोली चलाने से इंकार किया।

संगठित आन्दोलन

- गांधीवादी तरीके से संचालित आन्दोलन
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन के विरोधात्मक कार्य को देखें तो असहयोग की तुलना मे अधिक उग्र था एक तरफ कानून का उल्लंघन तो था ही दूसरी तरफ सरकार के आर्थिक हितों पर भी चोट पहुंचाने की कोशिश की गई।
- रचनात्मक कार्यों को पहले की तरह ही महत्व दिया गया लेकिन आन्दोलन के दूसरे चरण मे हरिजन उत्थान कार्यक्रम पर अधिक बल दिया गया।
- आंदोलन को प्रत्येक स्थिति में अहिंसात्मक रखने पर बल था और आन्दोलन के समानांतर कुछ हिंसात्मक घटनाएँ भी हुई फिर भी आन्दोलन को वापस नही लिया गया।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

• सरकार की दमनकारी नीति एवं गांधीवादी रणनीति को केन्द्र मे रखते हुए आन्दोलन को वापस वापस लिया गया। वापस लेने के बावजूद सामाजिक आधार क्षेत्रीय; लक्ष्य इत्यादि के दृष्टिकोण से इस आन्दोलन का राष्ट्रीय आन्दोलन में विशेष महत्व है।

Note :-

सीमांत गांधी - (अब्दुल गफ्फार खाँ)
संस्था - खुदाई खिदमतगार (लाल कुर्ती)
पख्तून पत्रिका पश्तो भाषा

गांधी जी → 1932 में छुआछूत विरोधी लीग
→ 1933 में हरिजन नामक अखबार और हरिजन यात्रा की शुरूआत।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform